पर्यावरण असंतुलन से विश्व में अप्रत्यासित घटनाएँ !

विगत 4-5 वर्षो से वातावरण व् जलवायु परिवर्तन में उत्तरोतर वृद्धि सम्पूर्ण विश्व में देखी जा रही है । एक तरफ- केदारनाथ की दुर्घटना अथवा सूखे से किसानो की भुखमरी से असामयिक मृतुदर में बढ़ोतरी रही तो दूसरी तरफ- तूफानी वर्षा से ओडिशा, चेन्नई, केरल, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान अथवा मध्य प्रदेश पिछले वर्ष भरी बरसात से जनजीवन अस्त-व्यस्त रहा और तमाम मवेशी और लोगो की जीवन लीला भी समाप्त हो गयी ।

अब प्रश्न यह उठता है की क्या यह स्थिति केवल भारतवर्ष में ही थी- तो उत्तर मिलता है की सम्पूर्ण विश्व ऐसी दुर्घटनाओ से प्रभावित रहा - चाहे अमेरिका हो या लन्दन, जर्मनी, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, चीन, हो या जापान आदि । कंही तूफानी वरिश तो कही धूलभरा तूफान और कही वर्फबारी तो कही जलप्लावन ।

यह सुनकर आप को अजीब सा लगेगा कि दिसंबर 2016 में दुनिया का सबसे बड़ा रेगिस्तान, बर्फिस्तान बन गया । यह बात सहारा मरुस्थल की है जिसे देखकर मौसम विज्ञानियों के भी पसीने छूट रहे हैं । इस विशाल रेगिस्तान में चारों तरफ बर्फ ही बर्फजम गई है । अब सऊदी अरब जो रेगिस्तान में बसा है, जहां बूंद-बूंद पानी के लिए मीलों सफर करना पड़ता है , वहां ऐसी बर्फबारी हुई कि पहाड़ के पहाड़ सफेद हो गए । सड़कों पर बर्फका अंबार लग गया, आखिर ऐसा कैसे हो गया?

रूस का सबसे ठंडा इलाका साइबेरिया, जहां साल भर बर्फ रहती है, लेकिन, इस बार आसमान से ऐसी बर्फबारी हुई कि 83 सालों का रिकॉर्ड टूट गया । पारा माइनस 62 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया द्य आखिर ऐसे बदलाव की वजह क्या है? दुनिया का सबसे बड़ा रेगिस्तान क्यों और कैसे बन गया बर्फिस्तान?

धरती पर अब तक का सबसे अधिक बर्फ समाप्त हुयी है । एक ऐसा बर्फका घोटाला कहा जा सकता है जिसने पूरी दुनिया के लिए सबसे बड़ा संकट खड़ा कर दिया है । हम इसका नाम घोटाला इसलिए दे रहे हैं, क्योंकि धरती पर हवा और पानी की तरह बर्फभी बेहिसाब है । इतना ज्यादा जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते पर कुदरत की ये अनमोल संपदा लगातार समाप्त होती जा रही है । जैसे उत्तरी ध्रुव पर 1 लाख 10 हजार वर्ग किलोमीटर और दक्षिणी ध्रुव पर 1 लाख 37 हजार वर्ग किलोमीटर थी जो उत्तरी ध्रुव पर लगभग आधे से ज्यादा समाप्त हो गयी है । प्रश्न यह है इसके लिए कौन जिम्मेदार है? ये सिर्फ एक कयास नहीं दुनिया के लिए अब तक की सबसे खतरनाक चेतावनी है । एक ऐसी चेतावनी जिसे नजरअंदाज करना इस धरती के लिए महाविनाश की वजह बन सकता है । सर्दियों का मौसम हमेशा के लिए गायब हो जाएगा और ये धरती किसी रेगिस्तान की तरह झुलसने लगेगी । हमारा यह बयां कर देना आपको डराना नहीं बल्कि वास्तिविकता से दुनिया को आगाह करना है तथा प्रकृति की किसी भी बड़ी अनहोनी से बचाना है ।

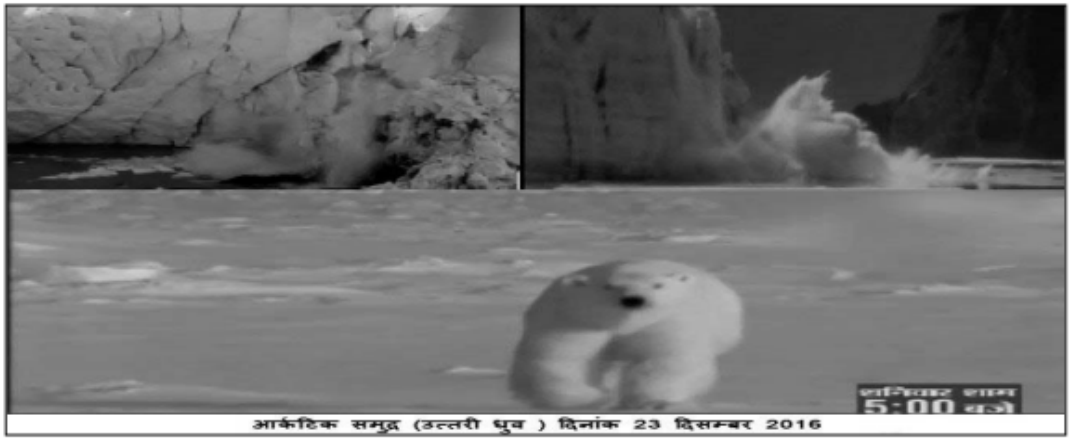

आर्कटिक समुद्र (उत्तरी ध्रुव) दिनांक 23 दिसम्बर 2016

क्योंकि धरती के सबसे बड़े वर्फ के ध्रुवीय भण्डारो में जो महासंकट आया है, उसकी तवाही से दुनिया में कोई नहीं बच पाएगा । यह महासंकट पिछले वर्ष हम देख चुके है जो इस धरती पर अभी भी मंडरा रहे हैं और आगे भी वह महासंकट से हिंदुस्तान से लेकर अमेरिका तक सबके होश उड़ा देने के तैयार हैं । पिछले साल की अंतरिक्ष से ली गई सैटेलाइट इमेज इसके सबूत है ।

वही आर्कटिक जिसे हम उत्तरी ध्रुव के नाम से जानते हैं, जहां सालों बर्फका बसेरा रहता है, इतनी ज्यादा बर्फकि उसमें पूरी धरती समा सकती है । पर उस आर्कटिक सागर की अब क्या हालत हो गई है । कुछ दी गयी तस्वीरें जो दुनिया के सबसे बड़ी स्पेस एजेंसी नासा ने धरती से सैकड़ों किलोमीटर ऊपर अंतरिक्ष से ली हैं, भयानक हलचल उसी आर्कटिक जोन की दिखा रही है । कैसे नॉर्थ पोल पर पिघल रही बर्फ किस तरह दुनिया के महासागरों को और ज्यादा भरती जा रही है द्य इसमें कोई संदेह नहीं है की दुनिया के करीब तमाम देश हैं, जो समुद्र के किनारे बसे है वह सभी डूबने से तवाह हो जायेंगे, इससे हिंदुस्तान भी अछूता नहीं रहेगा । यद्यपि इस प्रकार की घटनाओं की जानकारी प्रोफ0 भरत राज सिंह ने दुनिया को वर्ष 2012 से 2015 के बीच प्रकाशित अपनी किताबों के माध्यम दे रखी थी और सभी को आवश्यक कदम उठाने के लिए आगाह भी कर रखा था । परन्तु हमें पुनः सोचना पड़ेगा कि क्या हम सम्पूर्ण विश्व से जन-जीवन की समाप्ति को देखना चाहते है अथवा इस धरती जो अनमोल खजानों से भरी हुयी है और भरत में माता स्वरुप मानते हैं उसको बचने का प्रयत्न करेंगे । हम समझते हैं कि यह सभी का दायित्व है की अधिक से अधिक प्रयासकर तथा संकल्प लेकर कुछ बिन्दुओं पर मनन करें और उन्हें अपनाएं ।

◆अधिक से अधिक पेड़ लगायें ।

◆कम से कम डीजल व् पेट्रोल चालित वाहन चलायें ।

◆कोयले से चलने वाले थर्मल पॉवर स्टेशन को कम उपयोग करे । ◆अधिक से अधिक सौर उर्जा अथवा पवन उर्जा का बिजली बनाने में इस्तेमाल करे ।◆एलईडी बल्ब व ट्यूबराड का अधिक से अधिक इस्तेमाल करें ।◆जाड़े में गीजर का कम से कम इस्तेमाल करे अथवा अलग से 20 लीटर पानी गरमाकर उपयोग करें ।◆कचरा - प्रबंधन से बिजली तैयार करें । ◆प्लास्टिक की जगह कपड़े के थैले का उपयोग करें ।◆पूल कार अथवा पब्लिक वाहन का इस्तेमाल करें ।◆ए0सी0 का तापमान 25-26 डिग्री रखें ।◆पुरानी वस्तुओं को रिसर्कुलेट करें अथवा जरूरत मंद को दान दे दें ।

प्रो0 (डा0) भरत राज सिंह
महानिदेशक, स्कूल ऑफमैनेजमेन्ट साइंसेस,
व अध्यक्ष, वैदिक विज्ञान केन्द्र, लखनऊ-226501